Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिकता की स्थिति का अध्ययन

प्रयाग माधव झा
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

डॉ अमित कुमार
शोध निदेशक, सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, बी०एम०ए० कॉलेज, बहेड़ी, दरभंगा

प्रस्तावना

वर्तमान समय में मनुष्य के नैतिकता में बहुत कमी आई है। आज एक मनुष्य में दूसरे मनुष्यों के प्रति, पशु पक्षियों के प्रति एवं प्रकृति के प्रति आत्मीयता बहुत कम दिखाई पड़ती है। ऐसी स्थिति में नैतिक शिक्षा के द्वारा ही नैतिक दायित्व का विकास एवं दूसरों के प्रति न्याय, कर्तव्यनिष्ठा, सदाचार आदि का विकास किया जा सकता है । नैतिकता मनुष्य को श्रेष्ठ बनाने तथा सामाजिक एकीकरण बनाए रखने के लिए भी आवश्यक है । सदाचार विहीन शिक्षा विश्व बंधुत्व को भी बुरी तरह से प्रभावित करती है । जहां सदाचार की अवहेलना होती है वहीं भाषा, प्रांत, जाति, धर्म, खान-पान, रहन-सहन एवं वेश-भूषा जैसे भेदभाव उत्पन्न होते हैं। यह मानव समाज में परस्पर संघर्ष, घृणा एवं ऊँच-नीच की भावना को बढ़ावा देती है।

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का कथन है कि "ईश्वर सृष्टि में जो भी व्यक्ति उत्पन्न करता है उन सब को एक जैसा ही उत्पन्न करता है। आगे चलकर वे अपने ज्ञान-अज्ञान के कारण ही अच्छे-बुरे बन जाते हैं । धन-वैभव और पद-प्रतिष्ठा अच्छाई का प्रमाण नहीं है। अच्छाई के लक्षण तो हैं सेवा, सहायता, सहयोग, सहानुभूति, प्रेम और उदारता आदि । जिस व्यक्ति में ये गुण हैं, उसे अच्छा ही कहना होगा । फिर चाहे उसके पास धन-वैभव और पद-प्रतिष्ठा हो या ना हो।" आचार्य जी का यह कथन एक ओर जहाँ मानवीय गरिमा को इंगित करता है वहीं दूसरी ओर उसकी यथार्थ कसौटी को भी दर्शाता है। ज्ञान के सर्वोपरि महत्व पर प्रकाश डालते हुए वे कहते हैं कि- 'ज्ञान व्यक्ति को शीलवान, शिष्ट और विनम्र बनाता है । इन गुणों का परिणाम समाज में आदर, सम्मान और सहयोग के बिना कुछ हो ही नहीं सकता। जो समाज में इस तरह की स्थिति पा लेता है उसे आत्माविकास में बड़ी सुविधा रहती है । यह आत्मविकास परमानंद की ओर आने वाला आध्यात्मिक मार्ग है। भगवान राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध, ईसा और सुकरात आदि जो भी युग-प्रवर्तक महात्मा और महापुरुष हुए हैं, वह सब ज्ञान का विकास करके ही वैसे बन सके हैं।'ज्ञान रूपी इस महान तत्व की आवश्यकता की पूर्ति भी शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश कर अर्थात् शिक्षा को मूल्यपरक बनाकर ही की जा सकती है। तत्कालीन शिक्षा केवल विषयों की शिक्षा एवं परीक्षा तक ही सिमटी हुई है। यदि हम कहें कि वर्तमान शिक्षा का स्वरूप एकांकी है तो यह कहना गलत नहीं

होगा। नैतिक मूल्यों के विकास पर ही व्यक्ति का संपूर्ण आंतरिक विकास निर्भर करता है ।नैतिक मूल्यों का संबंध नैतिकता से है । नैतिकता से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा एक परिवार की आंतरिक प्रेरणा और दिशा-निर्देशन में अपनी इच्छा और मन पर नियंत्रण और पूर्ण अधिकार का सतत् प्रयास किया जाना है। वैसे तो बालक जन्म से ही माता-पिता के संपर्क में बहुत से नैतिक मूल्यों का अनुकरण करता है और उसे सीखता है, किंतु कभी-कभी माता-पिता के द्वारा ही उसे झूठ बोलने के लिए भी प्रेरित किया जाता है। इस स्थिति में विद्यालय शिक्षा का उत्तरदायित्व इस दिशा में और भी अधिक हो जाता है।

अतः इसके प्रमुख घटकों, पाठ्यक्रम एवं शिक्षक के माध्यम से ऐसा वातावरण निर्मित किया जाए जिससे छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास हो सके। पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा से संबंधित विषयवस्तु का समावेश तो होना ही चाहिए साथ ही पाठसहगामी क्रियाओं में भी नैतिक मूल्यों पर आधारित क्रियाकलाप शामिल किया जाना चाहिए। शिक्षकों को नैतिक शिक्षा प्रदान करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि विद्यार्थी अपने दैनिक जीवन में नैतिक मूल्यों को अपने व्यवहार में परिलक्षित करें तथा यह उनमें आत्मानुशासन विकसित कर सके। शिक्षक विद्यार्थियों में दूसरों की मदद करने की भावनाओं का विकास इस प्रकार करें कि वह दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहे । इसके लिए शिक्षक के द्वारा विद्यार्थियों को समय-समय पर इस तरह के अवसर भी प्रदान करना चाहिए। विद्यार्थी अपनी जिम्मेदारियों को दूसरे पर थोपने तथा जैसे-तैसे कार्य को पूरा करने के बजाय मन लगाकर अच्छे से अपने कार्य को पूरा करें, इसके लिए भी बच्चों को प्रेरित किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों के द्वारा नीतिपरक कार्य करने पर शिक्षक स्वयं तथा अन्य बच्चों के द्वारा उसकी प्रशंसा करें जिससे कि उसका उत्साहवर्धन हो सके तथा अन्य बच्चे भी अच्छे कार्यों के लिए दूसरे की प्रशंसा करना सीख सके।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व:-

नैतिकता मानव जीवन को समाज के लिए उपयोगी बनाती है। नैतिकता के बिना मनुष्य वास्तविक रूप में मानव की श्रेणी में नहीं आता है । अपने माता-पिता, शिक्षकों, संबंधियों एवं समाज और राष्ट्र के अन्य घटकों के लिए उपयोगी सिद्ध होना तथा इसके प्रति कृतज्ञ होने के लिए मनुष्य में नैतिकता का होना अति आवश्यक हो जाता है। नैतिकता मनुष्य को केवल अपने से बड़ों का सम्मान करना ही नहीं सिखाती बल्कि अपने पारिस्थितिकी तंत्र में खुद को समायोजित करना भी सिखाती है । मनुष्य में नैतिक मूल्यों की कमी के कारण ही आज समाज का अस्तित्व खतरे में दिखाई पड़ता है । मनुष्य प्रकृति के सभी घटकों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को नजरअंदाज कर रहा है साथ ही वह इन घटकों का विनाश भी कर रहा है इस दृष्टिकोण से यह शोध आवश्यक हो जाता है ताकि हमारे समाज के नई पीढ़ी के युवाओं में नैतिकता को बढ़ावा देकर समाज राष्ट्र एवं प्रकृति के प्रति इन्हें जिम्मेदार बनाने का हरसंभव प्रयास हो।

अध्ययन के उद्देश्य:-

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों में नैतिकता की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्राओं में नैतिकता की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में नैतिकता की स्थिति का अध्ययन करना।

प्रयुक्त उपकरण एवं शोध विधि:-

प्रस्तुत शोध की समस्या के समाधान हेतु शोधार्थी ने स्वनिर्मित मूल्य मापनी का प्रयोग शोध उपकरण के रूप में किया। इसकी वैधता एवं विश्वसनीयता के लिए स्वनिर्मित मूल्य मापनी को विशेषज्ञों के समक्ष प्रस्तुत किया गया तथा विशेषज्ञों की राय के अनुसार इसका निर्माण किया गया। प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग कर आंकड़ों को संग्रहित किया गया तथा आंकड़ों के आधार पर वर्णन एवं विश्लेषण किया गया तथा इसी के आधार पर प्रमुख निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया।

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या एवं न्यादर्श:-

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या बिहार राज्य के बेगूसराय जिले के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत समस्त छात्र एवं छात्राएं हैं। इसके न्यादर्श के लिए बेगूसराय जिले के दो सरकारी तथा दो गैर-सरकारी विद्यालयों का चयन कर इन विद्यालयों से यादृच्छिक विधि से 60 छात्राओं एवं 60 छात्रों (प्रत्येक विद्यालय से 15-15 छात्राओं एवं छात्रों) का चयन किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण:-

प्रस्तुत शोध के न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण उद्देश्यों के आधार पर इस प्रकार है-

उद्देश्य-1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों में नैतिकता की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष:- शोध के इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बेगूसराय जिले के दो सरकारी विद्यालयों से 30 छात्रों में नैतिकता की स्थिति का अध्ययन किया गया तथा दो गैर सरकारी विद्यालयों से भी 30 छात्रों में नैतिकता की स्थिति का अध्ययन किया गया। जिसमें सरकारी विद्यालयों के 60% छात्रों मैं नैतिकता की स्थिति उच्च पाई गई तथा 40% छात्रों में नैतिकता की स्थिति निम्न पाई गई। जबकि गैर सरकारी विद्यालयों के 40% छात्रों में नैतिकता की स्थिति उच्च पाई गई एवं 60% छात्रों में नैतिकता की स्थिति निम्न पाई गई।

उद्देश्य-2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्राओं में नैतिकता की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
निष्कर्ष:- शोध के इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बेगूसराय जिले के दो सरकारी विद्यालय से 30 छात्राओं में नैतिकता की स्थिति का अध्ययन किया गया तथा दो गैर सरकारी विद्यालयों से भी 30 छात्राओं में नैतिकता की स्थिति का अध्ययन किया गया । जिसमें सरकारी विद्यालयों के 70% छात्राओं में नैतिकता की स्थिति उच्च पाई गई तथा 30% छात्राओं में नैतिकता की स्थिति निम्न पाई गई। जबकि गैर सरकारी विद्यालयों के 50% छात्राओं में नैतिकता की स्थिति उच्च पाई गई एवं 50% छात्राओं में नैतिकता की स्थिति निम्न पाई गई।

उद्देश्य-3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में नैतिकता की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
निष्कर्ष:- शोध के इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बेगूसराय जिले के दो सरकारी विद्यालय से 60 विद्यार्थियों में नैतिकता की स्थिति का अध्ययन किया गया तथा दो गैर सरकारी विद्यालयों से भी 60 विद्यार्थियों में नैतिकता की स्थिति का अध्ययन किया गया। जिसमें सरकारी विद्यालय के 65% विद्यार्थियों में नैतिकता की स्थिति उच्च पाई गई तथा 35% विद्यार्थियों में नैतिकता की स्थिति निम्न पाई गई। जबकि गैर-सरकारी विद्यालयों के 45% विद्यार्थियों में नैतिकता की स्थिति उच्च पाई गई तथा 55% विद्यार्थियों में नैतिकता की स्थिति निम्न पाई गई।

निष्कर्ष एवं सुझाव:-

इस शोध के अध्ययन के पश्चात प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से जो निष्कर्ष प्राप्त हुआ है उसका वर्णन इस प्रकार है:-

इस शोध के उद्देश्यों के आधार पर जो आंकड़े प्राप्त हुए उससे यह ज्ञात हुआ कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के 60% छात्रों में नैतिकता की स्थिति सकारात्मक है किंतु 40% छात्रों में यह स्थिति संतोषजनक नहीं है जबकि गैर सरकारी विद्यालयों में केवल 40% छात्रों में ही नैतिकता की स्थिति सकारात्मक है एवं 60% छात्रों में यह स्थिति नकारात्मक पाई गई। इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की अपेक्षा नैतिकता की स्थिति अधिक संतोषजनक एवं सकारात्मक है।

इस शोध के उद्देश्यों से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह भी ज्ञात हुआ कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के 70% छात्राओं में नैतिकता की स्थिति उच्च है तथा 30% छात्राओं में यह स्थिति निम्न पाई गई जबकि गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत इस स्तर के 50% छात्राओं में नैतिकता की स्थिति सकारात्मक एवं संतोषजनक पाई गई तथा 50% छात्राओं में यह स्थिति नकारात्मक पाई गई। इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं में नैतिकता की स्थिति गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं की अपेक्षा अधिक सकारात्मक एवं संतोषजनक है।

अतः यह स्पष्ट होता है कि गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों मैं नैतिकता की स्थिति संतोषजनक नहीं है जिसके कारण इन विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में नैतिकता की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए ध्यान देने की आवश्यकता अधिक है । विद्यालयों में नैतिकता की स्थिति में सुधार हेतु शिक्षा के प्रमुख घटक पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्यों से संबंधित विषयवस्तुओं का समावेश किया जाना चाहिए तथा शिक्षकों को इसके लिए कक्षा- कक्ष में जिन विद्यार्थियों के व्यवहार में नैतिकता परिलक्षित होती है उसे प्रोत्साहन देकर अन्य विद्यार्थियों को अपने व्यवहार में नैतिकता को समाहित करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

संदर्भ सूची:-

1. शर्मा, आर० ए० (1995),- मानव मूल्य एवं शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ ।
2. भार्गव, उषा (2003), - किशोर मनोविज्ञान, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
3. पांडेय, रामशकल (2008), - धर्म, दर्शन और शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ ।
4. गुप्ता, एस० पी० (2005), - सांख्यिकीय विधियां, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
5. श्रीवास्तव, डी० एन० (2021), - सांख्यिकी एवं मापन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।